सनातन अनुसंधान संगठन द्वारा प्रकाशित
सनातन
पत्रिका
प्रथम संस्करण
Sanatan Research organization
वैदिक गणित
मंगल
के रहस्य
धर्म की आवश्यकता
कवर विशेष
ओरछा के राजा राम
तिलक लगाने का महत्व

सनातन अनुसंधान संगठन द्वारा यह 'सनातन ई-पत्रिका' बनाई गई है जिससे कि अधिक से अधिक लोगों तक, हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति पर आधारित शोधकार्य व तथ्यात्मक ज्ञान सुगमता से पहुंच सके।
हमारे संस्थान व इस पुस्तिका का उद्देश्य ही यह है कि वर्तमान में प्रचलित अधार्मिक तत्वों पर चोट करके धर्म में प्रचलित मिथ्या, अन्धविश्वास, अतिपाखण्ड एवं अनेकों कुप्रथाओं को समाज से निकाल कर, हमारे प्राचीन ग्रन्थों में छुपे अखण्ड ज्ञान पर शोध करके जनसामान्य तक उसे पंहुचाकर धर्म व राष्ट्र के इस कार्य में अपना सहयोग देना।
धर्म, इतिहास, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान के भागों को आपके समक्ष लाना ही इसका उद्देश्य है, अतः इसे पढ़कर और समझकर अधिक से अधिक लोगों तक पंहुचाएं व हमारे उद्देश्यों को सफल बनाने में हमारी सहायता करें व धर्म प्रचार के इस पावन कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें।
मुझे आशा है कि पत्रिका का यह प्रथम अंक आपको अच्छा लगेगा।

धन्यवाद।

-सम्पादक

# विषय सूची

## • व्यक्तिगत लेख

पृष्ठ सं0



## • दर्शनीय स्थल



## • शोधकार्य व अन्य लेख



स.अ.सं.

- धर्म की आवश्यकता क्यों?
- धर्म की परिभाषा क्या है?
- क्या धर्म है और क्या अधर्म?
- प्राचीन ग्रन्थों में धर्म का वर्णन।

# धर्म की आवश्यकता

**धर्म** ही है जिसने हमारी मानवीय सभ्यता को लाखों वर्षों से अच्छे से चलायमान रखा। अत: धर्म का पतन मनुष्य के पतन का कारण बनेगा इसमें कोई शंका नहीं है।

डॉ० प्रकाशचंद्र गंगराड़े जी अपनी पुस्तक 'हिन्दुओं के रीति-रिवाज तथा मान्यताएं' में लिखते हैं कि "धर्म का विषय बड़ा गहन है। धर्म धृ+मन् से बनता है। धृ का अर्थ है जो है, जो विद्यमान है, जो स्थापित है, सुरक्षित है, नित्य है...और मन् का अर्थ है याद करना, मानना, मूल्यवान समझना, प्रत्यक्ष करना और पूजा करना।"

धर्म को अंग्रेजी में रिलिज़न(religion) व उर्दू में मजहब कहते हैं जो कि पूर्णत: सही नहीं है। ये शब्द धर्म शब्द के समानार्थी न होकर किसी विशेष संप्रदाय, मत व आस्था से सम्बन्धित हैं। धर्म तो धारण करने योग्य है जिससे हम सही अर्थों में मनुष्य बनकर 'मनुर्भव:' को चरित्रार्थ करते हैं।

हमारे कुछ प्राचीन ग्रन्थों में धर्म की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-

**सुगांऋतस्य पंथा।**
अर्थात् धर्म का मार्ग मानव को सुख देता है। *-ऋग्वेद ८/३/१३*

**सुखस्य मूलं धर्म:।**
अर्थात् धर्म सुख का मूल है। *-चाणक्यसूत्राणि*

**यतोभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि: स धर्म:।**
अर्थात् धर्म वो आचरण है जिसको धारण करने से लोक व परलोक दोनों में अभीष्ट सि[illegible]ाँ प्राप्त हों। *- वैशेषिक शास्त्र १/१/२*

**धर्मनित्यास्तु ये केचिन्न ते सीदन्ति कर्हिचित्।**
अर्थात् धर्म परायण कभी संकट को प्राप्त नहीं होते। *- महाभारत/वनपर्व/२६३/४४*

**जीवन्तं मृतवन्मन्ये देहिनं धर्मावर्जितम्।**

**यतो धर्मेण संयुक्तो दीर्घजीवी व संशय:।।**

अर्थात् धर्म रहित मनुष्य मृत मनुष्य के समान है।
धार्मिक मनुष्य मरने के बाद भी जीवित रहता है।
धार्मिक मनुष्य दीर्घजीवी होता है।

*- चाणक्यनीति १३/९*

**धर्मादर्थ प्रभवति धर्मात्प्रभवते सुखम्।**

**धर्मेण लभते सर्व धर्मसारमिदं जगत्।।**

अर्थात् धर्म से अर्थ प्राप्त होता है, धर्म से सुख का उदय होता है,धर्म से सब मिलता है। धर्म ही संसार का सार है।

*- वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड ९/३०*

मनुस्मृति मे महाराज मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं-

**धृति: क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।**

**धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।**

अर्थात् धैर्य, क्षमा, वासना नियन्त्रण, अस्तेय(चोरी न करना), शुद्धि, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धिमत्ता, विद्या, सत्य पालन व अक्रोध धर्म के दस लक्षण हैं।

*-मनुस्मृति ६/९२*

महर्षि कणाद के अनुसार जिस ज्ञान को अपनाने से हमारी भौतिक विज्ञान व आध्यात्मिक उन्नति एक समान हो, वही धर्म है। जो मत विज्ञान की कसौटी पर खरा ना उतरे वह धर्म नहीं है।

अत: हम कह सकते हैं कि धर्म ही मानवता व इस जगत का आधार है। आज हम विश्व के कई धर्मों को जानते हैं परन्तु सबको धर्म की बजाय मत कहना अधिक सही होगा क्योंकि इस एकल ब्रह्मांड में धर्म भी केवल एक ही हो सकता है, अनेक नहीं। वही एक सनातन धर्म प्रत्येक मनुष्य के द्वारा अनुकरणीय है। हम सभी को चाहिए कि हम धर्म का पालन करें व उसकी रक्षा करें।

धर्म की रक्षा करने में ही हम सभी की सुरक्षा निहित है, इसीलिए कहा जाता है..
"धर्मो रक्षति रक्षित:"।
हम सभी को सत्य को जानकर धर्म पर अमल करना चाहिए व अधार्मिकता का सर्वनाश करना चाहिए। आचार्य चाणक्य, चाणक्यसूत्राणि में कहते हैं-
**न कदाचिदपि धर्म निपेधयते।** अर्थात् धर्म का विरोध ना करें और ना कराएं।

• • •

हमारे
# प्रमुख मेले

समय समय पर आयोजित होने वाले मेले व सम्मेलन धार्मिक व राष्ट्रीय एकात्मकता व समरसता बढ़ाने में बेजोड़ हैं। भारत के तीन प्रमुख मेले निम्नलिखित हैं :-

**क. कुम्भ मेला-** नासिक, उज्जैन, प्रयाग व हरिद्वार में (प्रति बारहवें वर्ष)

**ख. गंगा सागर मेला-** प० बंगाल के गंगासागर तट पर, प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के पर्व पर

**ग. पुष्कर मेला-** अजमेर के पास पुष्कर तीर्थ में कार्तिक पूर्णिमा को प्रतिवर्ष।

चित्र:-
*कुम्भ मेले के कुछ मनोरम दृश्य।*

## दर्शनीय स्थलः
## औरछा (म०प्र०)

उत्तर भारत में मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले में प्रसिद्ध धार्मिक स्थल ओरछा में भगवान राम का मन्दिर अपनी विशेष मान्यता रखता है। ओरछा एक मात्र एसा स्थान है जहाँ श्री रामचंद्र को एक राजा रूप में पूजा जाता है। वे 'राजा राम' कहलाते हैं। राजा होने के कारण ही यहाँ श्री राम जी को प्रतिदिन सुबह और शाम सशत्र बल द्वारा "गार्ड ऑफ ऑनर" दिया जाता है।
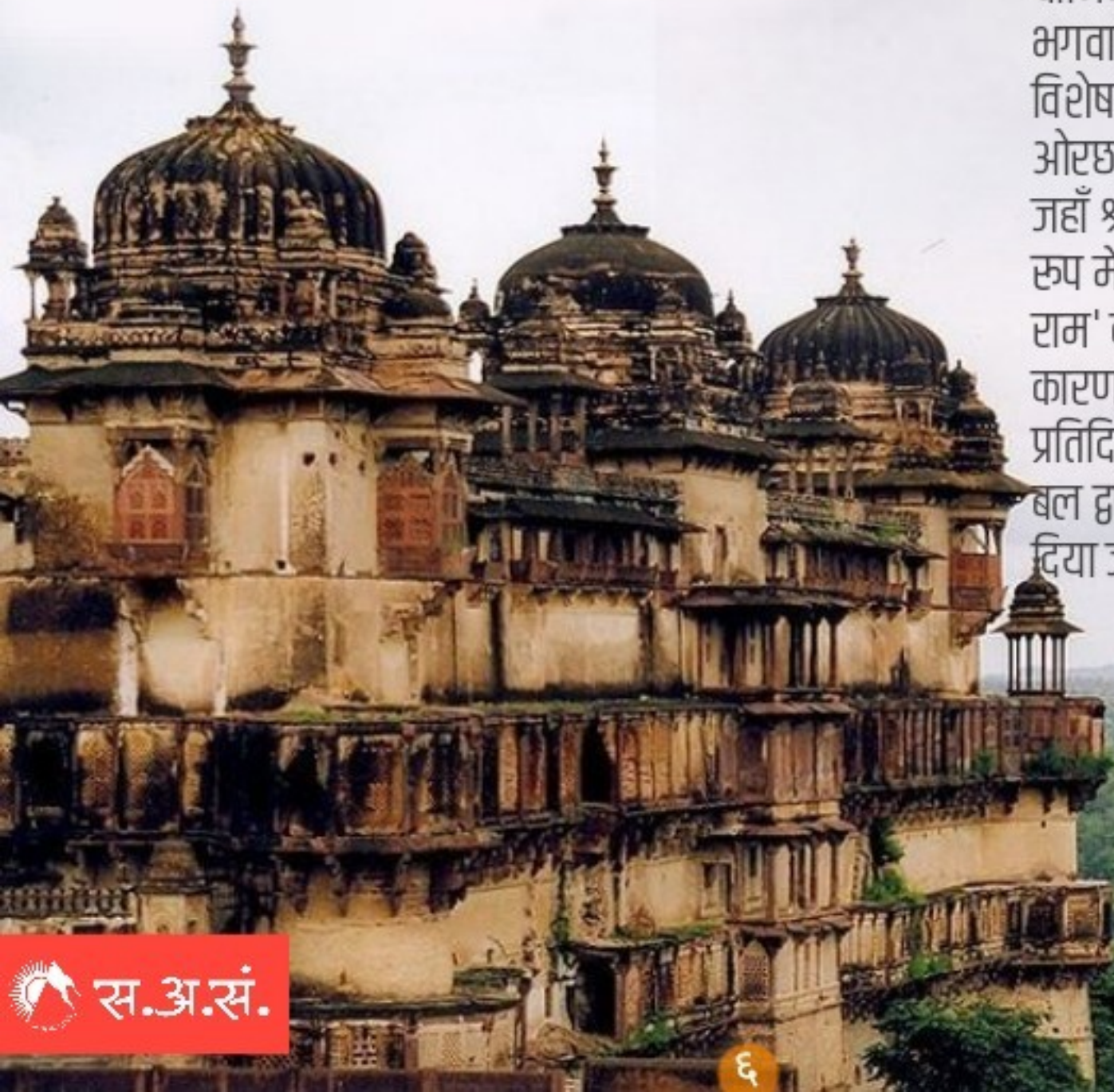
झांसी से लगभग 18 कि0मी0 दूर स्थित ओरछा राजा रुद्र प्रताप सिंह द्वारा सन् 1500 ई. के आस-पास बसाया, बताया जाता है।
ओरछा भारत के सुन्दर, मनोरम स्थानों में से एक है। हरे-भरे वनों के बीच बड़े-बड़े महलों व मन्दिरों के किनारे बहती बेतवा नदी के दृश्य यहाँ आए लोगों का मन मोह लेते हैं। ना केवल भारतीय बल्कि बड़ी मात्रा में विदेशी पर्यटक भी किले, मन्दिर, बेतवा नदी के तट पर स्थित छतरियों व नदी किनारे जंगल में घूमने वाले पशु-पक्षियों को निहारने सहित अनेक एतिहासिक भवनों को देखने के लिए प्रतिवर्ष आते हैं। यह स्थान जितना अपने भवनों के लिए प्रसिद्ध है उतना ही है कथाओं के लिए भी।
राजाराम मन्दिर में जड़े शिलालेख व जनश्रुतिओं के अनुसार श्री राम को ओरछा की रानी चैत्र शुक्ल नवमी, दिन सोमवार(वि.सं.1631) सन् 1574 में अयोध्या से ओरछा तक पैदल चल कर 8 माह,28 दिनों में अपने साथ लायी थीं। किवदंती के अनुसार महाराजा मधुकर शाह कृष्ण भक्त व रानी कुंअर गनेश रामभक्त थीं। एक दिन राजा और रानी में इसी बात को लेकर अन-बन हो गई व रानी को वचन देकर महल छोड़कर अयोध्या जाना पड़ा। वचन था कि वे राम को लाए बिना ओरछा जीवित नहीं लौटेंगीं। इसके बाद आषाढ़ कृष्ण 12 वि.सं. 1630 को महारानी ने प्रस्थान किया।अयोध्या में सरयू नदी के तट पर घोर तप किया। अपने उद्देश्यों में असफल होता देख रानी ने नदी में ही कूद जाना सही समझा पर तभी एक साधू ने उन्हें आत्महत्या करने से रोका व राम जन्म भूमि पर जाकर राम की प्रतिमा रानी को दे दी। कहा जाता है कि रानी अब श्री राम के सम्पर्क में थीं व राम अब उनसे बात कर रहे थे। श्री राम ने ओरछा जाने से पहले अपनी कुछ शर्तें रानी के समक्ष रखीं। वे शर्तें थीं पुष्य नक्षत्र में ही चलना वो भी पैदल व साधुओं की टोली के साथ, ओरछा के राजा के रूप में वहाँ रहना व एक अन्यशर्त ये भी थी कि जहाँ भी उन्हें(राम जी को) पहली बार में बैठा दिया जाएगा वे फिर दोबारा वहाँ से नहीं हिलेंगे।रानी ने उनकी सभी शर्तें

मान लीं। रानी का सन्देश पाकर राजा ने भव्य मन्दिर का निर्माण शुरू कराया। मन्दिर पूर्ण बनने से पहले ही श्री राम वहाँ आ पंहुचे अतः उनको राज भवन में जगह दी गई एवं अपनी शर्तानुसार वे वहीं विराजमान हो गए और वही आज 'राजाराम मन्दिर' कहलाता है। राजा मधुकर ने अपना राज-पाट राम जी को सौंप दिया व राम ही वहाँ के लोगों के लिए राजा बन गए। हालांकि यह बात कितनी सत्य हैं ये कहना तो असम्भव जैसा ही है परन्तु एसी कई कहानियां वहाँ के निवासियों के मनों में बस चुकी हैं।

मन्दिर के पास एक बाग है जिसमें स्थित हैं दो ऊंची मीनारें जिनको सावन-भादों के नाम से जानते हैं। इनके बारे में किवदंती प्रचलित है कि वर्षा ऋतु में श्रावण-भाद्रपद के सन्धिकाल में ये दो स्तम्भ(या इनकी छाया) आपस में जुड़ जाते थे। हालांकि इसके कोई ठोस प्रमाण नहीं हैं।

बुंदेलों का राजकाल सन् 1783 में खत्म हो जाने के साथ ही ओरछा भी गुमनामी के घने बादलों में खो गया। तत्पश्चात ये स्वतन्त्रता संग्राम के समय थोड़ा सुर्खियों में आया।

अतः अपनी एतिहासिक धरोहर व प्राकृतिक सुन्दरता के कारणआज यह भारत के दर्शनिय स्थलों में से एक है।

सावन-भांदो स्तम्भ

## सामान्य ज्ञान :-

- हमारे चार वेद-
  - ऋग्वेद
  - यजुर्वेद
  - सामवेद
  - अथर्ववेद

- सोलह संस्कार-
  - गर्भादान
  - पुंसवन
  - सीमान्तोन्नयन
  - जातकर्म
  - नामकरण
  - निष्क्रमण
  - अन्नप्राशन
  - चूड़ाकरण
  - कर्णछेदन
  - उपनयन
  - वेदारम्भ
  - समावर्तन
  - विवाह
  - वानप्रस्थ
  - संन्यास
  - अंत्येष्टि

- त्रिदेव-
  - ब्रह्मा
  - विष्णु
  - शिव

# vedic गणित

वैदिक गणित हमारे प्राचीन ग्रन्थों से प्राप्त अखण्ड ज्ञान की परम्परा का एक छोटा सा अंग है। इसके सूत्र अत्यन्त सरल व व्यवहारिक होते हैं। ऋषियों द्वारा इन सूत्रों का उपयोग किया जाता था। ये सूत्र हमें गणित की समस्याओं को हल करने का नवीन दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

**स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ** जी द्वारा सन् १९६५ में वैदिक गणित नामक पुस्तक लिखी गई थी, जिसमें १६ मूल सूत्र दिये गए थे। स्वामी जी के कथनानुसार जिन सूत्रों पर उनकी यह पुस्तक आधारित है ये सूत्र अथर्ववेद के परिशिष्ट में आते हैं।

बहुत से उपसूत्रों के अतिरिक्त, डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल जी ने १६ सूत्र इस प्रकार बताए हैं :–

१. एकाधिकेन पूर्वेण
२. निखिलं नवतश्चरमं दशत:
३. परावर्त्य योजयेत्
४. ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम्
५. शून्य साम्य समुच्चये
६. शून्यमंन्यत्
७. संकलनव्यवकलनाभ्याम्
८. पूरणापूरणाभ्याम्
९. चलन कलनाभ्याम्
१०. यावदूनम्
११. व्यष्टिसमष्टि:
१२. शेषाव्यंकेनचरमेण
१३. सोपान्त्यद्वयमन्त्यम्
१४. एकन्यूनेन पूर्वेण
१५. गुणित समुच्चय:
१६. गुणक समुच्चय:

इन सभी सूत्रों का कार्य अत्यन्त सरल है व आसानी से इनको समझा जा सकता है। इनके उपयोग से गणनाएं तीव्र व आसान लगने लगती हैं व हमारी समझ को नया आयाम मिलता है।

पत्रिका के इस खण्ड में हम दो सूत्र, 'निखिलं नवतश्चरमं दशत:' व 'परावर्त्य योजयेत्' को समझेंगे।

## • निखिलं नवतश्चरमं दशत: -

इसका अर्थ है आखिरी 10 में से, बाकी 9 में से।
इसकी गणितीय व्याख्या है कि "किसी संख्या का अपने अगले क्रियात्मक आधार से पूरक जानने के लिए, उसके सभी अंकों को 9 में से घटाएं व अंतिम अंक को 10 में से घटाएं।"
उदाहरणार्थ,

36 का(क्रियात्मक आधार 100) पूरक पाने के लिए, 3 को 9 में से(=6) व 6 को 10 से(=4) घटाएं अत: प्राप्त अंक 64 ही 36 का पूरक होगा।

1357 का (क्रियात्मक आधार 10000) पूरक पाने के लिए 1,3,5,7 को क्रमश: 9,9,9,10 में से घटाना होगा(=8,=6,=4
,3) व उत्तर 8643 प्राप्त हो जाएगा।

• यदि कोई संख्या शून्य(0) पर समाप्त होती है, तो अशुन्य संख्या को अन्तिम मानते हैं व अन्तिम शून्यों को अन्त में लिख देते हैं।

उदाहरणार्थ,
4700 का पूरक पाने के लिए, 4 को 9 में से व 7 को 10 में से घटाएं(=5,=3)
अत: 4700 का पूरक 5300 होगा।

### अभ्यास १.१

निम्नलिखित संख्याओं का पूरक व क्रि०आ० ज्ञात करने का अभ्यास करें:-

क. 64

ख. 12800

ग. 10002

घ. 9999

*(उत्तर: पत्रिका के अन्त में)*

# परावर्त्य योजयेत् :-

इसका अर्थ है पक्षान्तरण व समायोजन।

किसी संख्या का अपने पिछले आधार (क्रि०आ०) से पूरक, उसका अधिकाय है। यह अधिकाय एक धनात्मक संख्या होती है।

उदाहरणार्थ,
110 का अधिकाय:- 110-100=10
पूरक:- 100-110=-10

**अभ्यास १.२ :-**

निम्नलिखित संख्याओं का अधिकाय ज्ञात करें-

क. 15

ख. 112

ग. 1113

*(उत्तर: पत्रिका के अन्त में)*

# गुणा जब संख्या अपने आधार के निकट हो

चरण१ - संख्या व उसके पूरक लिखना

चरण२ - पूरकों का गुणा

किसी भी एक संख्या में से दूसरे के पूरक को घटाना

## उदाहरणार्थ,

- 98 का 76 से गुणा।

चरण १) संख्या व उनके पूरक लिखें

(100)
98 2
76 24
———

चरण २) 2×24=48

76-2=74

या

98-24=74

98 2
76 24
———
74 / 48

उत्तर:— **7448**

- 111 का 125 से गुणा।

चरण १) संख्या व उनके पूरक लिखें

125 (-25)
111 (-11)
———

चरण २) (-25)×(-11)= 275

125-(-11)= 136

या

111-(-25)= 136

125 (-25)
111 (-11)
———
136 / 275

चूंकि दाएं पक्ष 275 में तीन अंक हैं परन्तु क्रियात्मक आधार(100) में 3 अंक हैं। अत: 2 को हासिल में लेजाकर बाएं पक्ष में जोड़ देंगे।

136 / 275 = (136+2) / 75

= 13875

उत्तर:— **13875**

**अभ्यास१.३ :-**

निम्नलिखित संख्याओं का गुणन करने का अभ्यास करें(पूरकों के अनुप्रयोग से)-

क. 8×7

ख. 91×88

ग. 11×14

घ. 109×108

ड़. 99×98

*(उत्तर: पत्रिका के अन्त में)*

( अन्य सूत्र पढ़ें, पत्रिका के अगले संस्करण में )

**क्या आप जानते हैं ?**

11×11 = 121
111×111 = 12321
1111×1111 = 1234321
11111×11111 = 123454321

# तिलक लगाने का महत्व



हमारे कोई भी धार्मिक व सांस्कृतिक कार्य बिना तिलक लगाए सम्पन्न नहीं होते। जन्म से लेकर मृत्यू तक, सभी १६ संस्कारों में तिलक का उपयोग किया जाता है।

तिलक मस्तष्क/ललाट के जिस स्थान पर लगाया जाता है वह स्थान पीयूष ग्रंथि (पिनियल ग्लेंड) का स्थान माना जाता है, जिसका हमारे शरीर, चेतन व अवचेतन विचारों को नियंत्रित करने में बड़ा योगदान है। इसी स्थान विशेष को हमारे तीसरे नेत्र(आँख) की संज्ञा दी गयी है। हमारी दोनों भौंहों के बीच (जहाँ सुषुम्ना, पिंगला नाड़ी होती है), तिलक लगाने से आज्ञा चक्र जाग्रत करने में सहायता मिलती है।तिलक लगाने से सिर दर्द में राहत मिलती है व एकाग्रता शक्ति बड़ती है। आज हिन्दू धर्म के विभिन्न संप्रदाय भिन्न भिन्व प्रकार का तिलक लगाते हैं परन्तु उद्देश्य सबका एक ही है।
तिलक मुख्त: कुमकुम, चन्दन, हल्दी व भस्म का लगाया जाता है, इन सभी के अपने अलग अलग गुण हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के ब्रह्मपर्व में कहा गया है-

स्नानं दानं तपो होमो देवतापितृकर्म्म च।
तत्सर्वं निष्फलं यााति ललाटे तिलकं बिना।
ब्राह्मणास्तिलकं कृत्वा, कुयर्यात्संध्यान्यतर्पणम्।।

अर्थात् स्नान, होम, देव व पितृ कर्म करते समय यदि तिलक ना लगा हो तो यह सब कार्य निष्फल हो जाते हैं। ब्राह्मण को चाहिए कि वह तिलक धारण करने के बाद ही संध्या, तर्पण आदि सम्पन्न करे।

इसीलिए कहा जाता है कि तिलक शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक रूप से अत्यन्त आवश्यक है व अनेकों वर्षों से हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है।

प्राचीन काल में, जब पूरी पृथ्वी हमारी वैदिक संस्कृति का पालन करती थी उस समय भी समस्त पृथ्वी पर तिलक लगाने की परम्परा थी। यूरोप में भी तिलक लगाया जाता था इसके प्रमाण मिलते हैं नीचे बने चित्रों में⤵

ई०पू० रोम साम्राज्य के राष्ट्राध्यक्ष 'Pompei the great' के चित्र की यह तस्वीर, Smith ने अपनी पुस्तक, 'The History of Rome' में पृष्ठ 237 पर, पु०ना० ओक ने अपनी पुस्तक 'वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास भाग-३' के पृष्ठ 138 पर छापी थी।

चित्र में राजा के मस्तष्क पर वैष्णव संप्रदाय जैसा तिलक साफ साफ देखा जा सकता है।

यह चित्र Smith ने अपनी पुस्तक 'The History of Rome' के पृष्ठ 300 व अय्यंगर ने अपनी पुस्तक 'Long Missing Links' के पृष्ठ 185 पर अंकित किया है।

चित्र में एक अन्य राजा धोती पहने व तिलक लगाए हुए देखा जा सकता है।

आज मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ मित्रों, मैं ये नहीं कहता कि आप श्याम बाबा को पूजो, मैं किसी भगवान पर जोर भी नहीं

देता कि तुम उन्हें ही पूजो। मैं तो एक ही बात कहता हूँ कि जो तुम्हारे ईस्ट देव हैं उनका पूजन करो। कई भक्त होते हैं जो अपनी भक्ति को उजागर करते हैं, मैं तो कहता हूँ कि वो ढोंग रचाते हैं।

**आज हम मनुष्यों की सबसे बड़ी गलती है कि -**

जब भी कोई कार्य पूरा करवाना हो तो, पहुँच जाते हैं मन्दिर में, काम पूरा हो गया तो मन्दिर जाकर धन्यवाद भी नहीं देते और अगर गलती से किसी कार्य में देरी हो गई तो उल्हाना हर बार देने जाते हैं कि बाबा मुझसे क्या गलती हो गई जो मेरा कार्य नहीं किया फिर कहते हैं कि अब तो कर दो, यह हमारी विडम्बना है।

नीचे कुछ पंक्तियां लिख रहा हूँ जिसमे मैं बताना चाहता हूँ कि आज का इंसान भगवान से कैसा बर्ताव करता है :-

*क्रोध के कारण अंधे होकर, तुमको भी ललकार दिया।*
*जब जी चाहा पूजा की और, जब चाहा दुत्कार दिया।*

इन पंक्तियों में सच्चा भक्त कहता है :-

*नादानी की आड़ में कब तक, गलती मैं दोहराउंगा।*
*अब तो आकर बाँह पकड़ लो, वरना मैं गिर जाउंगा।*
*सागर इतना गहरा है कि, डूब प्रभु मैं जाउंगा।*

धन्यवाद।।

- पीयुष शर्मा
अध्यक्ष, स०अनु०सं०(राज०)
जयपुर, राजस्थान

# पवित्र भगवा ध्वज
# व
# राष्ट्रीय ध्वज

परम पवित्र भगवा ध्वज, यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ या किसी भी अन्य संगठन द्वारा स्थापित ध्वज नहीं है, यह चिर पुरातन काल से ही धर्म का प्रतीक रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं सनातन सेवा संघ ने भी इसी परम पवित्र भगवा ध्वज की प्रेरणा से राष्ट्र एवं धर्म के कार्य करने का संकल्प किया है। भगवा रंग दो रंगों (लाल व पीला) के मेल से बना है। लाल रंग शक्ति का प्रतीक है तथा पीला रंग ज्ञान का द्योतक है। सूर्योदय के समय सूर्य का रंग भी भगवा होता है जो कि नवीन ऊर्जा का परिचायक होता है। भगवा ध्वज त्याग एवं बलिदान का प्रतीक है। वर्ष १९२८ में गुरू पूर्णिमा के दिन परम पूज्य आद्य सरसंघचालक (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) स्व० श्री डॉ० केशव ब० हेडगेवार जी ने घोषणा की थी कि संघ का प्रतीक भगवा ध्वज ही होगा।

भारत का राष्ट्रीय ध्वज एवं भगवा ध्वज दोनो हमारे लिए परम श्रद्धा के विषय हैं। हम सभी जानते की भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा कुछ वर्ष पहले आया किन्तु भगवा ध्वज पुरातन काल से पूरे अखण्ड भारत का प्रतीक रहा है। राष्ट्रीय ध्वज का स्थान कोई और ध्वज नहीं ले सकता, वो

हमारे देश के संविधान द्वारा राष्ट्रीय ध्वज घोषित है। सभी भारतीयों के प्राणों में तिरंगे का स्थान है जिसे कोई बदल नहीं सकता, इसी प्रकार परम भगवा ध्वज का भी स्थान हम सभी के दिलों में है। भगवा ध्वज का भी स्थान कोई और नहीं ले सकता। तिरंगा हमारी शान है किन्तु भगवा भी हमारे लिए उतना ही महत्वपूर्ण है। **इदम् न मम्, इदम् राष्ट्राय स्वाहा।** ,इस मन्त्र के साथ जो कोई भी राष्ट्र व धर्म के कार्य के लिए आगे आया है उसके लिए भगवा ध्वज व राष्ट्रीय ध्वज दोनों श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु हैं।

महाभारत काल में श्री कृष्ण-अर्जुन व रामायण काल में श्री राम जी के रथ पर भगवा ध्वज फहरता था।
भारत की स्वतंत्रता के लिए १८५७ में लड़े गए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भी नेतृत्व का प्रतीक यही भगवा ध्वज था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का चुनाव चल रहा था, तब सबसे पहले भगवा ध्वज का नाम प्रस्तावित हुआ था किन्तु राजनीति के चलते इस ध्वज को राष्ट्रीय ध्वज नहीं बनाया जा सका, बाद में तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

**-विशाल महतो**
धनबाद, झारखंड

## सामान्य ज्ञान

### 1947 से पूर्व भारत के ध्वज:-

माराठ साम्राज्य (१६७४-१८१८)

सिख साम्राज्य (१७९९-१८४९)

विजयनगर साम्राज्य (१३३६-१६४६)

मुगल साम्राज्य (१५२६-१८५८)

दिल्ली सल्तनत (१५२६ तक)

कलकत्ता ध्वज (१९०६)

राष्ट्रवादी ध्वज (१९०७)

गाँधी जी का ध्वज (१९२१)

स्वराज्य ध्वज (१९२३-१९४७)

आजाद हिंद (१९४२-१९४५)

# कविता

हे भारत के वीर सपूतों,
शायद तुम उनको भूल गए,
जो अपनी कुर्बानी देकर,
भारत माँ तुमको छोड़ गए।

वीर शिरोमणि राणा प्रताप जो,
मेवाड़ के रखवाले थे,
हो चेतक पर सवार जिन्होंने,
भूमि के कर्ज़ उतारे थे।

जो अपनी माटी के खातिर,
खुद बलिदानी हो गए,
हे भारत के वीर सपूतों,
शायद तुम उनको भूल गए।

- गगन गुप्ता
बुलन्दशहर(उ०प्र०)
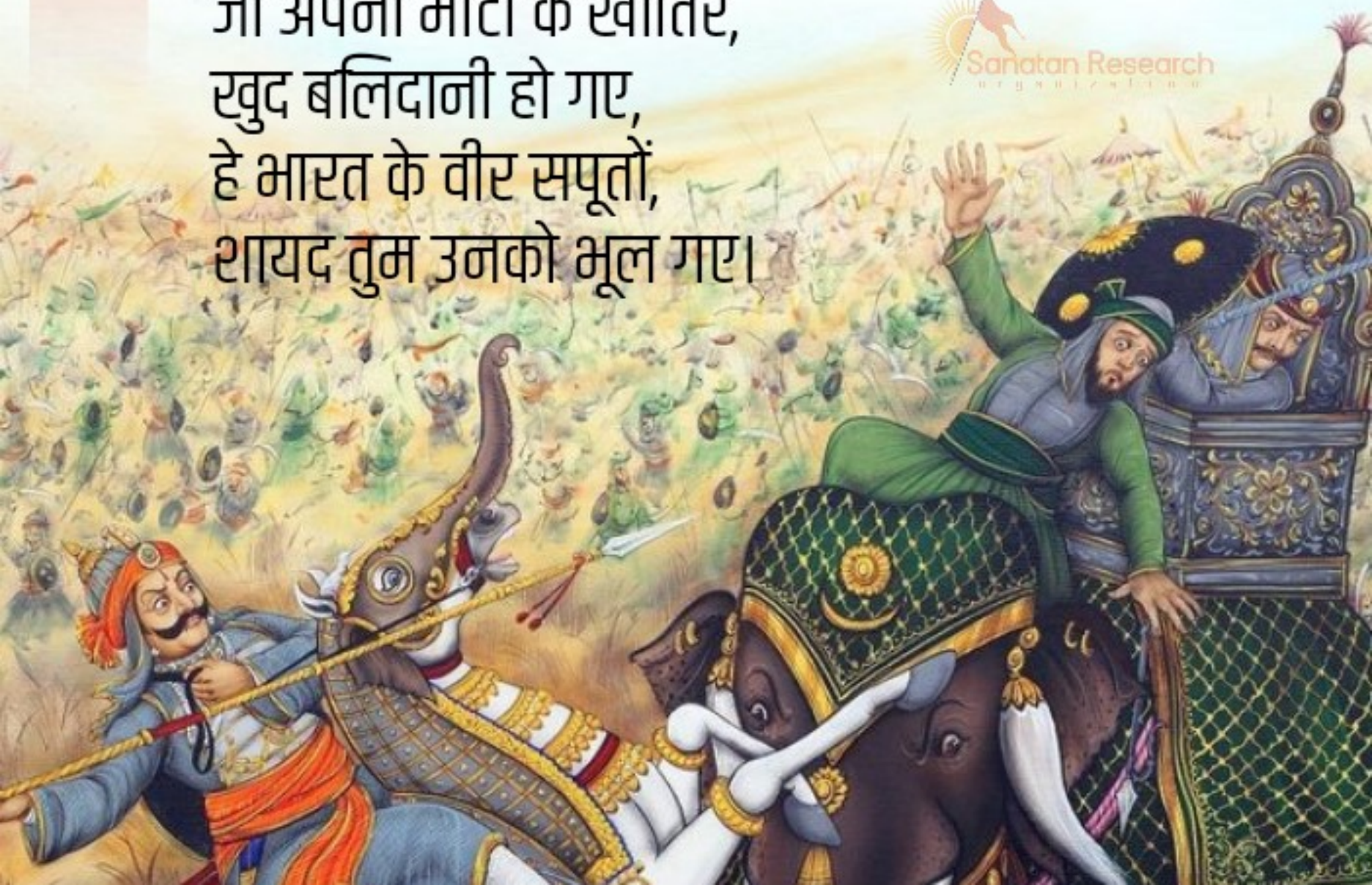
तुलसी
सनातन अनुसंधान संगठन
परिचय
संरचना
औषधीय गुण
सामान्य रोग व
उनका निवारण
तुलसी के पौधे का हमारी
हिन्दू संस्कृति में एक विशेष
स्थान है। प्राचीन ऐतिहासिक,
पुराणों व आयुर्वेदिक ग्रन्थों
में तुलसी का वर्णन मिलता है।
हमारे घरों के आँगन में इस
विशिष्ट पौधे को लगाने की
परम्परा रही है। ...

यह हमारी विडम्बना ही है कि हमने तुलसी को अच्छे से जाने बिना उसे केवल पूजा का साधन बना दिया। तुलसी को देवी या किसी देवी का स्वरूप मानना दोषपूर्ण ही होगा, क्योंकि पूज्यनीय, पूजने वाले से हमेशा उच्च ही होता है। तुलसी को पूजने की यह प्रथा या तो इसके संरक्षण के लिए बनी होगी या एक और कारण पं० श्री राम शर्मा जी अपनी पुस्तक 'तुलसी के चमत्कारी गुण' मे कुछ इस प्रकार कहते हैं, "धीरे धीरे तुलसी के स्वास्थ्य प्रदायक गुणों और सात्विक प्रभाव के कारण उसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई कि लोग उसे भक्ति भाव की दृष्टि से देखने लगे, उसे पूज्य माना जाने लगा।"

तुलसी एक द्विबीजपत्री औषधीय पौधा है जो सामान्यत: १ से ३ फुट ऊंचा होता है। इसकी पत्तियाँ रोएं-दार व हरी-बैंगनी आभा वाली होती हैं। तुलसी के कई प्रकार होते जिनमें श्यामा, राम, विष्णु व वन तुलसी प्रमुख हैं।

अग्रलिखित पंक्तियों से तुलसी के अन्य नामों का पता चलता है-

वृन्दा वृन्दावनी विश्वपूजिता विश्वपावनी।
पुष्पसारा नन्दिनी च तुलसी कृष्णजीवनी।

तुलसी अनेक रोगों की बेजोड़ दवा है। इसका प्रयोग आयुर्वेद के अलावा ऐलोपैथी, होमियोपैथी व यूनानी दवाओं में भी होता है। तुलसी से मन में पवित्रता व शुद्धता भी बढ़ती है। इसीलिए तो कहा जाता है-

त्रिकाल बिनता पुत्रप्रयाश तुलसी यदि
विशिष्यते कायशुद्धिश्चान्द्रायण शतंबिना।।
तुलसी गन्धमादाय यत्रगच्छन्ति मारुत:।
दिशो दशश्चपूचास्तुर्भूत ग्रामश्चतुर्विध:।।

अर्थात्, "यदि प्रात:,दोपहर और संध्या के समय तुलसी का सेवन किया जाए तो उससे मनुष्य की काया इतनी शुद्ध हो जाती है जितनी अनेक बार चांद्रायणव्रत करने से भी नहीं होती। तुलसी की गन्ध जितनी दूर तक जाती है, वहाँ का वातावरण और वहाँ के निवासी पवित्र व निर्विकार हो जाते हैं।"

'राजबल्लभ निघंटु' में कहा गया है-

तुलसी पित्तकृद्धाता क्रिमी
दौर्गन्धनाशिनी।
पश्विशुलापूरतिश्वास कास
हिक्काविकारजित।।

# कुछ सामान्य रोग
## व तुलसी से उनके उपचार

## • सिर दर्द:-

वन तुलसी का फूल और काली मिर्च को जलते कोयले पर डालकर उसका धूँआ सूंघने से सिर की पीड़ा में आराम मिलता है।

## • पेट रोग:-

तुलसी के पंचांग व अदरक का काढ़ा बनाकर पीने से दस्त सही होते हैं व पाचन शक्ति बढ़ती है।

## • दंत पीड़ा:-

तुलसी के ताजे पत्ते और काली मिर्च पीसकर, लेप दर्द के स्थान पर लगाने से आराम मिलता है।

## • गले में दर्द:-

गले के दर्द में राहत पाने के लिए तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर लेना चाहिए।

अर्थात्, "तुलसी पित्तकारक व वातकृमि और दुर्गन्ध को मिटाने वाली है,पसली के दर्द, खाँसी, श्वास व हिचकी में लाभकारी है।"
भारतीय चिकित्सा पद्धति प्राचीन व सर्वमान्य ग्रन्थ 'चरक संहिता' में, चरक जी लिखते हैं-

हिक्काज विषश्वास पार्श्वशूल विनाशिन:।
पित्तकृतत्कफवातघ्न सुरस:
पूर्ति गन्धहा।।

अर्थात्, "तुलसी हिचकी, खाँसी, विष विकार, पसली के दर्द को मिटाने वाली है,इससे पित्त की वृद्धि व दूषित कफ का शमन भी होता है व दुर्गन्ध भी दूर होती है।"

अत: हम सभी को चाहिए कि हम तुलसी व उसके ज्ञान को घर-घर तक पहुंचाने का कार्य करें व अधिक से अधिक लोगों को प्रोत्साहित करें।

# श्री कृष्ण

भाग:-०१

श्री कृष्ण को पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु का आठवां अवतार माना जाता है। पुराणों के अनुसार उनका जन्म द्वापरयुग में हुआ जो कि आठवें मनु वैवस्वत के मनवंतर के 28वें द्वापर में देवकी के गर्भ से 8वें पुत्र के रूप में, कारागार में माना जाता है।

समय की बात करें तो यह अवतार 3112 ईसा पूर्व, भाद्रपद, कृष्ण पक्ष की अष्टमी की रात्रि के आठवें मुहूर्त में हुआ, माना जाता है। विद्वानें ने मिलकर उनका जन्म-समय रात्रि के 'बारह बजे(12:00)' या इसके आस-पास ही माना है।

श्री कृष्ण को कान्हा, कन्हैया, श्याम, गोपाल, केशव, वासुदेव, द्वारकाधीश आदि नामों से भी पुकारा जाता है। वे निष्काम कर्मयोगी, आदर्श दार्शनिक ,कुशल नीतिज्ञ व दैवीय संपदाओं से युक्त एक महान योगी पुरूष थे। कोई भी महापुरुष उनके समान सौन्दर्य-वान, शक्तिशाली व बुद्धिमान, इतिहास में नहीं दिखता।

आधुनिक काल में श्री कृष्ण का चरित्र भागवतपुराण, गर्गसंहिता के अनुरूप दर्शाया जाता है जो कि पूर्णत: सही नहीं है,इस पर हम आगे प्रकाश डालेंगे। श्री कृष्ण के सम कालीन वेदव्यास जी द्वारा रचित महाभारत को छोड़कर सभी ग्रन्थों में श्री कृष्ण का अतिरंजित चित्रण हुआ है।

श्री कृष्ण का जीवन-चरित् व उनसे सम्बन्धित प्राचीन इतिहास के कई घटना कालों के तथ्य अपने आप में कई रहस्य समेटे हुए हैं। उन सभी शोध, तथ्यों व कथाओं हम आपके स मक्ष प्रस्तुत करेंगे, पत्रिका के अगले संस्करण से! ■

# द्वारका

एक खोज..!

पत्रिका के अगले अंक में



SSRO

# मंगल के रहस्य

मंगल ग्रह सदियों से ही इस मानव सभ्यता के लिए रहस्यमयी रहा है। विश्वभर की सभी प्राचीन सभ्यताओं में मंगल का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसका कारण है ना सिर्फ पृथ्वी के निकट होना बल्कि कुछ चौंकाने वाले तथ्य जो गवाही देते हैं मंगल ग्रह पर हुए भीषण युद्ध की!

वर्षों से चले आ रहे शोधों में वैज्ञानिकों को आश्चर्यजनक परिणाम मिले जो इस ओर इशारा करते हैं कि कभी मंगल पर जीवन रहा होगा जो किन्हीं कारणों के कारण नष्ट हो गया होगा। आज इस बात पर मतभेद हैं कि मंगल ग्रह पर वर्तमान में जीवन है या नहीं, अगर है तो किस रूप में?
प्रश्न यह भी उठता है कि वो कौन से तथ्य हैं जिनके कारण कुछ शोधकर्ता मंगल ग्रह पर भीषण संघर्ष होने की बात करते हैं? ये संघर्ष किसके बीच हुआ था ? क्या हमारे प्राचीन इतिहास में इसका उल्लेख है?

मंगल पर शोध से संबंधित यह लेख मंगल के प्रति आपकी समझ व दृष्टि ही बदल देगा।

## आधुनिक विचार व मंगल पर मानव सभ्यता के सबूत:-

विश्व के कुछ देशों ने मंगल ग्रह को जानने के लिए अपनी रुचि दिखाई है, भारत भी उन चुनिंदा देथों में से एक है। कुछ वर्षों तक वैज्ञानिक मानते रहे कि मंगल पर जीवन है ही नहीं और ना ही कभी भूतकाल में था परन्तु हाल ही के शोधों में मंगल पर जीवन के संकेत मिले। वर्तमान में मंगल पर जीवन है या नहीं इस पर कुछ मतभेद हैं।

परन्तु इतना कह सकते हैं कि मंगल ग्रह पर एक समय ना सिर्फ जीवन था बल्कि एक बहुत ही उन्नत व महातकनीकी सम्पन्न सभ्यता वहाँ निवास करती थी। वह सभ्यता हमारी पृथ्वी पर हजारों साल पहले रह रही मानव जाति जितनी या उससे भी उच्च कोटि की रही होगी। इसी मत पर हम विस्तार से तथ्यात्मक शोध करेंगे व जानने का प्रयास करेंगे।
निम्नलिखित बिन्दू दर्शाते हैं कि वर्तमान के कुछ शोधकर्ताओं ने मंगल पर सभ्यता होने की बात क्यों कही...:-

- मंगल पर ज़िनॉन129(Xenon-129) गैस पायी गई जो केवल परमाणु बम जैसे बड़े विस्फोट से उत्पन्न होती है।
इस बात से लगता है कि मंगल पर कोई बम जैसा विस्फोट किया गया था।

• मंगल ग्रह की ली हुईं कुछ तस्वीरें दर्शाती हैं कि मंगल पर कभी किसी सभ्यता के नगर रहे होंगे जो अब तहस-नहस हो चुके हैं।
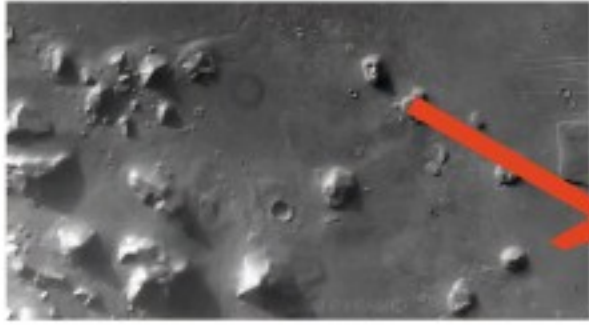
मंगल के साइडोनिया क्षेत्र की इन तस्वीरों में एक चेहरा व नष्ट हो चुका नगर दिख रहा है, इनकी ज्यामितिय व गणितिय संरचना भी नगर होने के संकेत देती है।
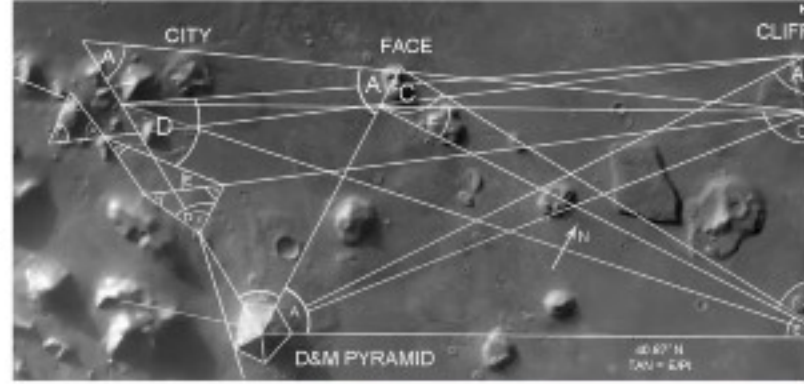
हांलाकि NASA के वैज्ञानिकों ने इसे भ्रमजाल(आँखों का धोका) कह कर अपनी सफाई दी की मंगल पर जीवन या किसी नगर के अवशेष नहीं मिले हैं।

कुछ वर्ष पहले 'यू0एफ0ओ0 साइटिंग डेली' नामक संस्था ने मंगल पर एक विशाल प्रतिमा देखे जाने का दावा किया था। संस्था के व्यक्ति स्कॉट सी वेयरिंग ने कहा था कि, "यह तस्वीर अपने आप में मंगल पर विकसित जीवन होने का प्रमाण है।"

पृथ्वी की प्राचीन सभ्यताओं के लेखों व कथाओं से मंगल व मंगल ग्रह के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है। क्योंकि पृथ्वी पर आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व रह रहीं उन सभ्यताओं की तकनीक व विज्ञान आज की तकनीक से कई गुना अधिक था।
वे सभी उन्नत सभ्यताएं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सनातन वैदिक धर्म से ही जन्मीं थीं व धर्म का पालन करती थीं।

## • हिन्दू धर्म में मंगल ग्रह :-

हिन्दू धर्म में मंगल को वीरता, युद्ध व पराक्रम का देवता माना जाता है। शिव पुराण व स्कंध पुराण में मंगल के जन्म की कथा मिलती है। वर्तमान में कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि मंगल ग्रह पृथ्वी से उत्पन्न हुआ था, हिन्दू धर्म भी मंगल की उत्पत्ति पृथ्वी से ही मानता है। भूमि से उत्पन्न होने के कारण ही मंगल को 'भौम' भी कहा जाता है। हिन्दू धर्म में मंगल को 'लोहित' भी कहा गया है जिसका अर्थ होता है लोहे का बना

हुआ या उससे परिपूर्ण, वैज्ञानिकों ने भी यह पुष्टि करी है कि मंगल की सतह पर आयरन(लोहा) के ऑक्साइड प्रचूर मात्रा में उपस्थित हैं। इनसे तो यही लगता है कि हमारे पूर्वजों को मंगल के बारे में बहुत कुछ पता था!

भारतीय हिन्दू लेखों में मंगल देव को लाल रोंएं की त्वचा ,चार हाथ वाला ,लाल वस्त्र पहने व भेड़ पर सवार दिखाया जाता है।

ज्योतिष में मंगल को शुभ व अशुभ फलदायी बताया जाता है। मंगल को मेष और वृश्चिक राशि व मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्रों का स्वामी माना गया है। ज्योतिष के अनुसार बुध को मंगल का विरोधी या शत्रु माना गया है। यदि मंगल पर कोई युद्ध हुआ था तो वह युद्ध बुध और मंगल की शत्रुता से भी संबंधित हो सकता है!

रामायण के किष्किन्धा काण्ड में भी बालि और सुग्रीव के युद्ध को मंगल और बुध की शत्रुता व युद्ध का उदाहरण देकर इस प्रकार समझाया गया है..:-

गगने ग्रहयोर्घोरं बुधाङ्गारकयोरिव।
तलैरशनिकल्पैश्च वज्रकल्पैश्च मुष्टिभि:।।
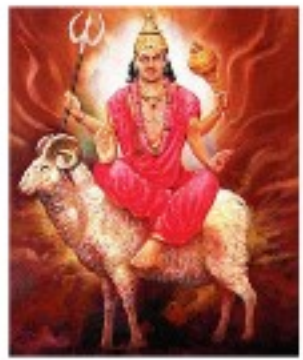
हिन्दू धर्म में मंगल देवता

## • मेसोपोटामिया व माया सभ्यता में :-

मेसोपोटामिया व माया समेत विश्व की लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं में मंगल को युद्ध, आग, पराक्रम का देवता माना जाता था। ईराक के प्राचीन लोग मंगल को एक क्रूर व युद्ध का देवता मानते थे।

मेसोपोटामियन सभ्यता के वही क्रूर देव जो अग्नि और युद्ध के देव हैं अर्थात् देवता 'नेरगाल' ही मंगल ग्रह माने जाते हैं।

मेसोपो-टामिया के नेरगाल देवता

माया सभ्यता में भी मंगल ग्रह का विशेष स्थान रहा है। कुछ शोधकर्ताओं का मत है कि उनका कैलेंडर भी मंगल ग्रह की चाल पर ही आधारित था। माया व सुमेरियन मिथकों में मंगल ग्रह पर देवताओं के बीच हुए भीषण युद्ध की बात मिलती है।

- ## मिस्र की सभ्यता और मंगल ग्रह :-

मंगल ग्रह के अतीत की खोज हमें मिस्र ले गई। सिन्धू घाटी की सभ्यता के समान मिस्र की सभ्यता विश्व की प्राचीनतम मानव सभ्यता रही है। मिस्र की प्राचीन सभ्यता का नाम सुनते ही हमें बड़े-बड़े पिरामिड व प्रतिमाएं याद आ जाती हैं। मिस्र की वह प्राचीन सभ्यता अन्य सभी सभ्यताओं की तरह ही प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सनातन वैदिक धर्म का पालन करती थी।
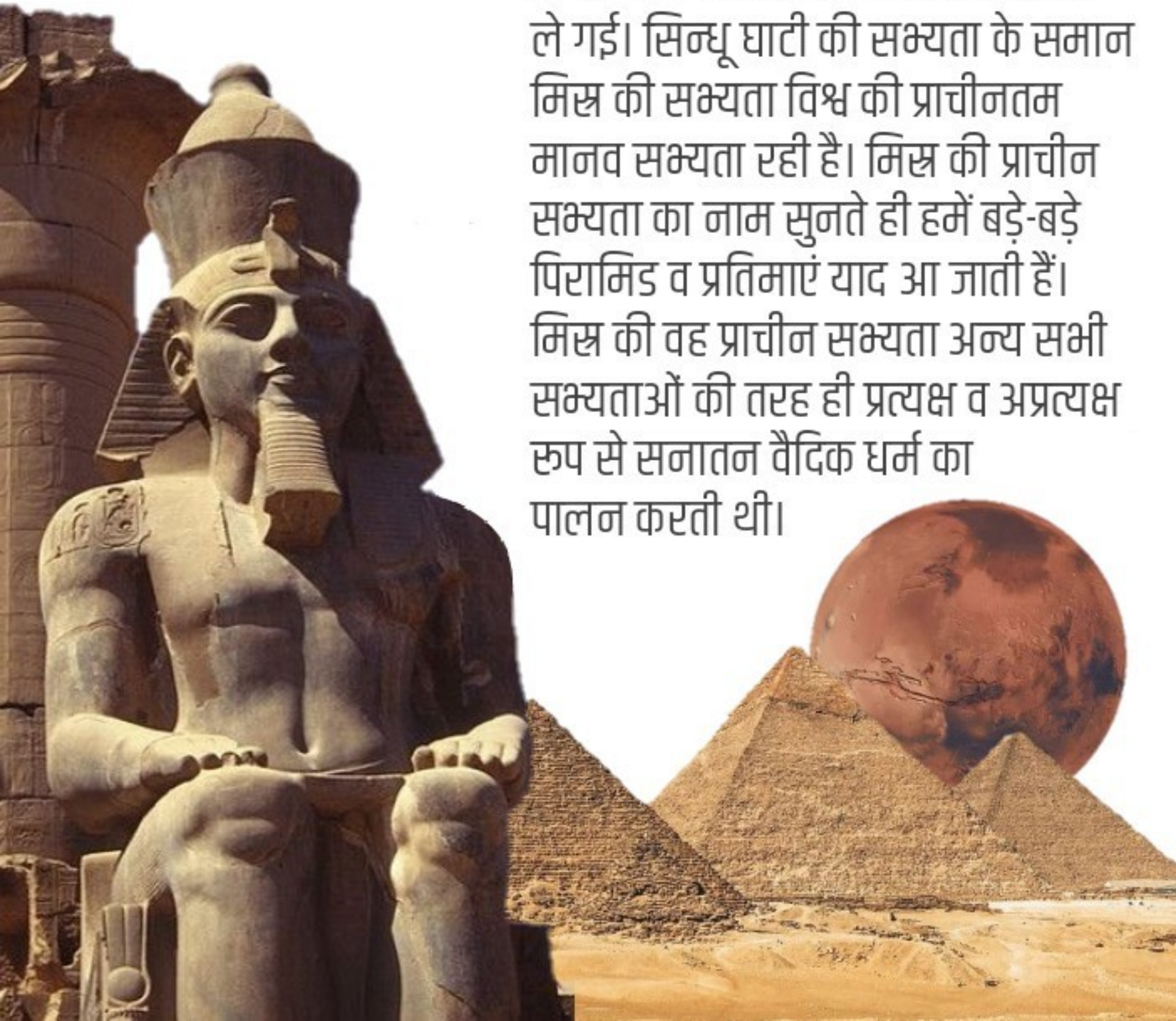
मंगल ग्रह से संबंधित मिस्र सभ्यता के तथ्य अत्यंत चौंकाने वाले हैं। हम सभी मिस्र में स्थित गीज़ा के पिरामिड व 'Sphinx' की विशाल प्रतिमा को तो जानते ही हैं। ये पिरामिड व प्रतिमा मानवीय सभ्यता के दैवीय ज्ञान की अद्भुत मिसाल है। Sphinx की प्रतिमा में सिर एक मनुष्य का व बाकी का हिस्सा सिंह का है। थॉमस मॉरिस जी (Thomas Maurice) अपनी पुस्तक 'The History of Hindustan, its arts and its sciences as connected with the history of the other great empires' (जो कि नवरंग प्रकाशन द्वारा सन् 1974 में पुन: हिन्दी में प्रकाशित की गई थी), में इस बात पर विचार जताया कि प्राचीन मिस्र में ही नरसिंह भगवान(भगवान विष्णु के अवतार) हुआ था एवं Sphinx की यह विशाल प्रतिमा इसी बात की प्रतीक है।

परन्तु पु.ना. ओक जी इसको नरसिंह अवतार की जगह राम जी से संबंधित पाते हैं। वे अपनी पुस्तक 'वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास भाग -2' में बहुत से तथ्य देकर इस ओर इशारा करते हैं कि मिस्र के प्राचीन लोगों की श्री राम जी में बहुत आस्था थी एवं Sphinx की विशाल प्रतिमा राम जी की ही प्रतीक है। वे पिरामिड (Pyramid) शब्द के 'p' अक्षर को silent मानकर, पिरामिड को राम-द (यानी राम द्वारा प्रदत्त) का अपभ्रंश मानते हैं।
अब इन तथ्यों को बगल में रख, इस स्थान के नाम की ओर ध्यान देते हैं जहाँ इतने विशाल पिरामिड आदि बनाए गए। ये सभी वर्तमान के Cairo नगर में स्थित हैं। नगर का आधिकारिक नाम अल-काहिरा: (Al-Qāhira) है जिसका हिन्दी में अनुवाद आपको चौंका देगा। इस नाम का अर्थ है 'मंगल ग्रह की एक जगह'। इसका अन्य नाम 'Khere-ohe' भी है जिसका अर्थ है 'युद्ध का स्थान', और हम यह बता ही चुके हैं कि मंगल को सभी जगह युद्ध का स्थान माना गया है। मिस्र के उस स्थान विशेष का नाम 'मंगल ग्रह की एक जगह' या 'युद्ध का स्थान' क्यों रखा गया? क्या पिरामिड व Sphinx की कोई नकल मंगल ग्रह पर भी स्थित हो सकती है?

यह बात बिल्कुल सच लगने लगी जब NASA द्वारा चौंकाने वाली एक तस्वीर साझा की गई। तस्वीर में दूर स्थित, पिरामिड व Sphinx की प्रतिमा जैसी ही संरचनाएं दिख रही हैं। ऐसा लग रहा है कि मानो किसी भीषण धमाके में ये संरचनाएं विकृत हो गई हों..!

विकृत पिरामिड
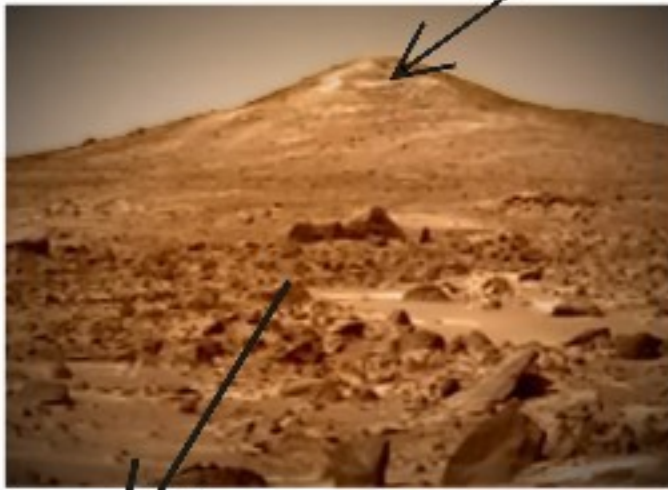
मंगल ग्रह की ली हुई तस्वीर

मिस्र में स्थित पिरामिड व स्फिंक्स की विशाल प्रतिमा

स्फिंक्स जैसी विकृत प्रतिमा

इन तस्वीरों को देख कर तो ज्ञात हो जाता है कि मिस्र के प्राचीन लोगों ने उस स्थान का नाम(जहाँ पिरामिड व प्रतिमा स्थित हैं) 'Al-Qahirāh'(मंगल ग्रह का स्थान) क्यों रखा। उनको पता था कि मंगल ग्रह पर भी ऐसी ही संरचनाएं स्थित हैं व उन्हीं की नकल उन्होंने पृथ्वी पर बनाई होंगी। पर उनको इतना ज्ञान कैसे मिला उसका जवाब है पूरी पृथ्वी पर फैला हुआ सनातन धर्म। हमारे पूर्वज उच्च लोकों के निवासियों (जिन्हें देवता बोलते हैं) के सम्पर्क में थे,इसी ओर तो हमारे प्राचीन ग्रन्थ भी इशारा करते हैं। ओक व मॉरिश साहब की बातों को भी मानलें तो इस बात की भी पुष्टि हो जाती है कि वैदिक धर्म का प्रभाव मंगल ग्रह पर भी था। यह भी सत्य ही लग रहा है कि मंगल पर कभी कोई भयंकर युद्ध भी हुआ था। परन्तु यह कहना अभी कठिन लग रहा है कि मंगल की वर्तमान स्थिति क्या है.. क्या अब भी वहाँ कोई सभ्यता बची है?

△ और विस्तार से जानें 'मिस्र,मंगल और राम रहस्य' पुस्तक में

- ऐतिहासिक प्रमाण
- सही और गलत
- वास्तविकता और मिथ्या

सनातन अनुसंधान संगठन

पुराण हिन्दू धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। 18 पुराणों व 21 उपपुराणों में देवी-देवताओं को केन्द्र मानकर पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म की बातें कही गयीं हैं। इन्हें वैदिक काल से पौराणिक काल में हुए महापरिवर्तन के समय में लिखा हुआ माना जाता है।
पुराण दो शब्दों, 'पुरा'(अर्थ-प्राचीन कथा) व 'अण'(अर्थ-बताना) से मिलकर बना हुआ माना जाता है। विष्णु पुराण के अनुसार पुराणों में चार बातें निहित हैं- आख्यान, उपाख्यान, गाथा और कल्पशुद्धि। पहले इनका अर्थ भी जान लेते हैं;-

- आख्यान- वह घटना जो वर्णनकर्ता स्वयं देखे।
- उपाख्यान- वह घटनाएं जिनको वर्णनकर्ता ने किसी और से सुना हो।
- गाथा- वे गीत जो पूर्व जनों के बारे में हों।
- कल्पशुद्धि- वह परिपाटी जो श्राद्ध* के समय की जाए।

आइये, जानते हैं कि पुराण कितने प्राचीन हैं। पुराणों का वर्णन कई प्राचीन वैदिक ग्रन्थों में भी मिलता है।
छन्दोग्योपनिषद् ( जो कि दस मुख्य उपनिषदों में से एक है एवं जिसे गुरु शंकराचार्य व दयानन्द जी ने प्राचीन माना है) में पुराण शब्द मिलता है ;-

स्वहोवाच ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं,
सामवेदमाथर्वणचतुर्थम् इतिहासपुराणं पञ्चमम्।

अर्थात्, है भगवान! मैं ऋग, यजु:, साम व अथर्व इन चारों वेदों को जानता हूँ, इसके अतिरिक्त इतिहास व पुराण से भी भिज्ञ हूँ।

मनुस्मृति के तीसरे अध्याय के २३२वें श्लोक में भी पुराण शब्द इस प्रकार आता है :-

स्वाध्यायं श्रावयेत् पित्र्ये धर्मशास्त्राणि चैव हि।
आख्यानानीतिहासांश्च पुराणान्य खिलानि च।।

इसके अतिरिक्त तैत्तिरीय आरण्यक व शतपथ ब्राह्मण में भी पुराण शब्द मिलता है। उपरोक्त उदाहरण दर्शाते हैं कि पुराण एक प्राचीन ग्रन्थ है। परन्तु यहाँ पुराण एक-वचन में प्रयुक्त हुआ है। तो प्रश्न उठता है कि १८ पुराण कहाँ से आए? और यदि पुराण इतने प्राचीन भी हैं तो उन्हें महर्षि वेद व्यास जी द्वारा रचित क्यों माना जाता है, जबकि वेद व्यास जी तो इतने प्राचीन समय में नहीं थे। इसका उत्तर मिलता है विष्णु पुराण के तृतीय अंश के छठे अध्याय के १५वें श्लोक से, -

आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः।
पुराणसंहितां चक्रे पुराणार्थविशारदः।।

अर्थात्, तदनन्तर, व्यास जी ने आख्यान, उपाख्यान, गाथा और कल्पशुद्धि के सहित पुराण-संहिता की रचना की।

आगे के श्लोकों(१६-२०) को पढ़ने पर ज्ञात होता है कि व्यास जी ने अपनी संहिता का अध्ययन अपने प्रसिद्ध शिष्य रोमहर्षण सूत जी को कराया एवं सूत जी ने एक अन्य संहिता की रचना करी। सूत जी की संहिता को आधार मानकर उनके छः प्रमुख शिष्यों में से तीन शिष्यों अकृतव्रण, सावर्णि और शांसपायन ने अपनी अलग संहिताएं लिखीं। इन चार संहिताओं से मिलकर एक विष्णुपुराण बना।

कह सकते हैं कि कई शिष्यों की पीढ़ियों ने नवीन संहिताओं की रचना करीं। उन्हीं का विकृत रूप ही आज के पुराण हैं,ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है।
अतः यह विचार कि वेद व्यास जी ने ही सभी पुराणों की रचना करी, दोषपूर्ण
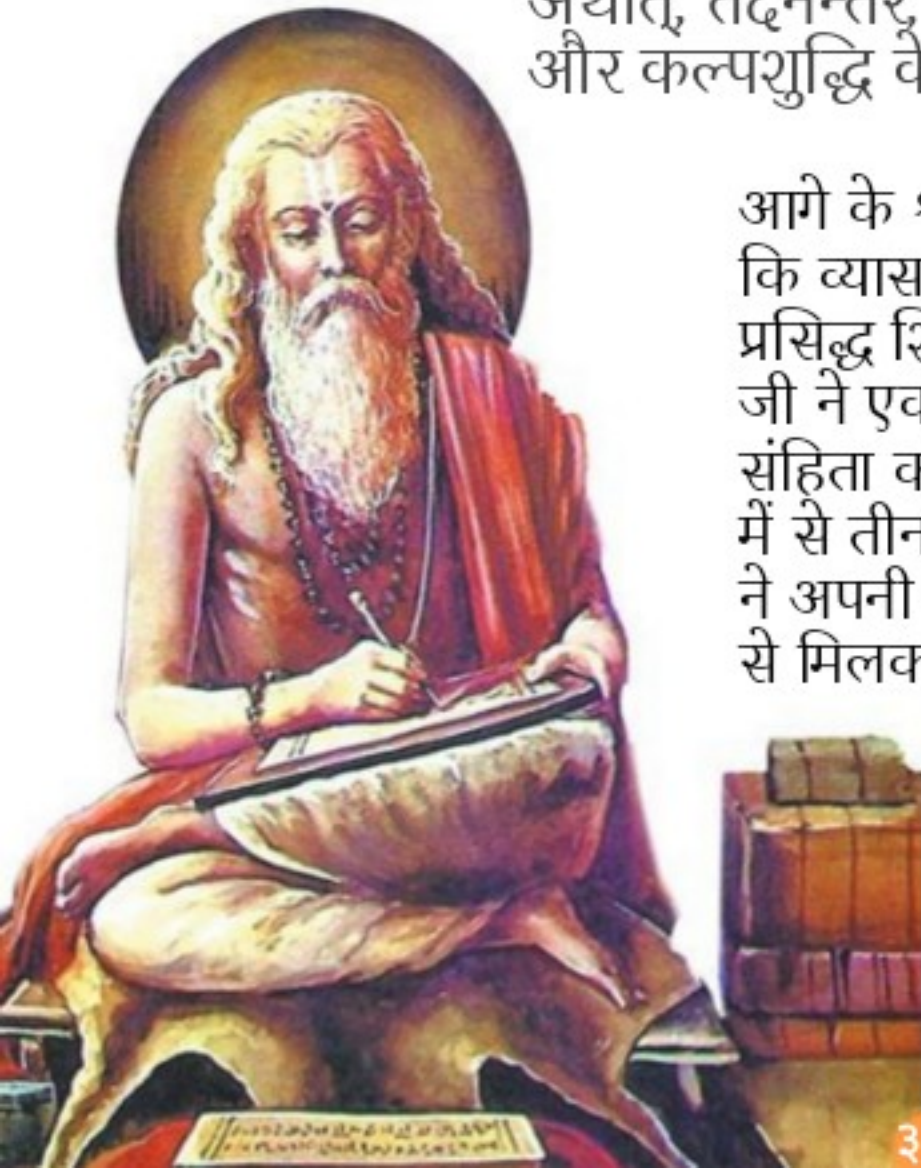
ही होगा। उपरोक्त तथ्यों से यह तो सिद्ध हो चुका है कि पुराण की बातें वैदिक काल से ही महत्वपूर्ण रही हैं । अब प्रश्न यह है कि क्या हमारे पास उपलब्ध सभी १८ पुराण पुर्णत: शुद्ध व वास्तविक हैं?
यह प्रश्न इसलिए उठता है क्योंकि पुराणों की कई कथाओं को पढ़ कर उन्हें सत्य या वास्तविक नहीं कहा जा सकता। कुछ बातें ऐसी हैं जो बुद्धि और प्रकृति के भी विरुद्ध हैं। स्वयं १८ पुराणों में ही कई मतों को लेकर मतभेद हैं। इन सभी के अतिरिक्त कई स्थानों पर भगवान व देवी-देवताओं को अशोभनीय ढंग से दर्शाया गया है, जो कि महान ऋषियों के द्वारा रचित नहीं हो सकता।

भारत के महान गणितज्ञ व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य 'भास्कराचार्य' जी अपनी पुस्तक 'सिद्धांतशिरोमणि' के गोलाध्याय खण्ड में पुराणों की एक कथा जिसके अनुसार पृथ्वी किसी आधार पर स्थित है (शेषनाग, कूर्म, सिंग आदि पर), को दोष युक्त पाकर लिखते हैं;-

इदानीं पुराणेषु भूमेराधारपरंपरा
या पठिता तां निराकुर्वन्नाह
मूर्तो धर्ता चेद्धरित्र्यैवमत्रानवस्था।
अन्ते कल्प्या चेत्स्वथक्तिः किमाद्ये,
किं नो भूमेः साष्टमूर्तेश्चमूर्तिः।।

अर्थात्, यदि भूमि किसी साकार वस्तु के आधार पर स्थित है तो उसका भी कोई आधार होना सम्भव है। यों एक वस्तु का दूसरा आधार कल्पना करते जाएं तो अपरिभाष्य हो जाएगा और यदि अन्त में निजशक्ति की कल्पना की जाए तो वह पहले से ही क्यों ना मानी जाए? क्या भूमि अष्टमूरत शिव की एक मूर्ति में से नहीं है? इस प्रकार स्वशक्ति से ही यह पृथ्वी स्थित है। पुराणों में जो शेषनाग, कूर्म आदि आधार की कल्पना की गई है वह दोषग्रस्त है।

दयानन्द सरस्वती जी, बंकीम चंद्र चट्टोपाध्याय जी व लाला लाजपत राय जी आदि कई विद्वानों ने भी आधुनिक पुराणों की कई कथाओं को दोषयुक्त माना है।

बहुत से विदेशी व भारतीय हिन्दू विद्वान भी वर्तमान में उपलब्ध पुराणों को अति प्राचीन नहीं मानते हैं। विष्णु पुराण का अंग्रेजी अनुवाद करने वाले प्रोफेसर विल्सन का भी मत है कि ब्रह्मवैवर्त पुराण गोकुलिए गोसाइयों के द्वारा रचित है, जो कि बहुत अधिक प्राचीन नहीं है।

स्वयं मत्स्यपुराण में ब्रह्मवैवर्त पुराण का वर्णन 1800 श्लोकों के उस पुराण के रुप में करा गया है जिसमें सूत जी के द्वारा नारद जी को व्याख्यान दिया गया व जिसमें रथन्तर कल्प के समाचार और ब्रह्मवराह चरित्र वर्णित हैं। अब यदि हम आज के उस पुराण को देखें जो ब्रह्मवैवर्त पुराण के नाम से प्रसिद्ध है तो हमको ज्ञात होगा कि इसमें न ब्रह्म वराह चरित्र है, न रथन्तर कल्प का समाचार और ना ही उसमें इस बात का कहीं पता चलता है कि इस पुराण का सूत जी ने नारद जी के सामने वर्णन किया था।^
तो प्रश्न यह है कि असली ब्रह्मवैवर्त पुराण कहाँ है?

महान स्वतंत्रता सेनानी, क्रान्तिकारी व शोधकर्ता लाला लाजपत राय जी द्वारा लिखित पुस्तक 'योगीराज श्री कृष्ण' के भूमिका खण्ड के पृष्ठ सं०45 पर लिखित है, "कुछ अंग्रेज तथा अनेक आर्य विद्वानों ने सहमत होकर यह व्यवस्था दी है कि वर्तमान पुराण वह पुराण नहीं हैं जिनका वर्णन उपनिषदों या अन्य प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। उन अंग्रेज पुराणतत्ववेताओं ने वर्तमान पुराणों का समय निश्चित किया है जिसके मानने से यह परिणाम नहीं निकलता वर्तमान काल में से कोई भी, विक्रम संवत् के बहुत पहले के हैं। इनमें से कुछ पुराणों का समय तो 14वीं या 15वीं शताब्दी ईस्वीं तक निश्चित किया गया है। इसके अतिरिक्त पुराणों में बहुत से ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि प्राचीन पुराण तो लुप्त हो गए और वर्तमान पुराण आधुनिक समय में बनाये गये हैं।"

उपरोक्त सभी तथ्यों को पढ़कर यही लगता है की आज हमारे पास जो 18 पुराण उपलब्ध हैं, वह वो पुराण नहीं हैं जिनका वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में है। इन पुराणों की बहुत सी बातों व कथाओं (उदाहरणार्थ- पृथ्वी का किसी ठोस आधार पर स्थित होना, पृथ्वी के सागरों का समस्त जल पी जाना, भगवान शिव व मोहिनी की आपत्तिजनक स्थिति, कथा सुनने मात्र से पापमुक्त हो जाना,

श्री कृष्ण जी को गोपियों के संग गलत रूप में प्रस्तुत करना, ज्वार-भाटा जैसे कई वैज्ञानिक विषयों की काल्पनिक कथा कहना, तुलसी व ब्रह्मा जैसे कई विषयों पर स्वयं पुराणों का एक-मत ना होना आदि) को जानकर लगता है कि वास्तविकता में यह असली पुराण नहीं हैं। हालांकि पुराणों में बहुत सी ज्ञान वर्धक व तथ्यात्मक सामग्री भी मिलती है(उदाहरणार्थ- युगों-कल्पों का वर्णन, प्राचीन राजघरानों की वंशावली, समय आदि से सम्बन्धित मापन प्रणाली आदि), फिर भी पुराणों को शत-प्रतिशत सही ही मानना सम्भवतः दोषपूर्ण ही होगा। पुराणों के लाखों श्लोकों पर अभी अपनी राय देना सम्भवतः जल्दबाजी ही होगा क्योंकि बहुत से ऐसे तथ्य (उदाहरणार्थ- संस्कृत का सही सही अनुवाद देखना, सत्यता और मिलावट का सही सही मूल्यांकन करना , समान्तर ग्रन्थों को भी समझना, कथाओं को कई परिपेक्ष्यों में सही से जांचना आदि) हैं जिनके अनुसार ही किसी के बारे में पूर्ण विवरण दिया जा सकता है। परन्तु यह भी सत्य है कि हमारे बहुत से प्राचीन व प्रमाणिक माने जाने वाले ग्रन्थों में समय-समय पर अधार्मिक व पाखण्डी लोगों के द्वारा मिलावट होती रही है और पुराण भी उनसे वंचित नहीं रहे हैं। ■

पत्रिका के अगले संस्करण से प्रारम्भ!

स.अ.सं.

योग
आध्यात्म

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

पतंजलि योगसूत्र

चित्त की वृत्तियों का रुक जाना योग है।

## अष्टांग योग :-

### • यम

समाजिक नैतिकता व सदाचार

- अहिंसा (अकारण हिंसा ना करना)
- सत्य (सत्यता अपनाना)
- अस्तेय (चोरी न करना)
- ब्रह्मचर्य (इन्द्रिय जनित सुखों को त्याग कर चेतना को ब्रह्म के ज्ञान में स्थिर करना)
- अपरिग्रह (आवश्यकता से अधिक संचय न करना)

### • नियम

पाँच मुख्य नियम

- शौच (शरीर व मन की शुद्धि)
- संतोष (संतुष्ट व प्रसन्न रहना)
- तप (अनुशासन की तपस्या)
- स्वाध्याय (आत्मचिंतन करना)
- प्रणिधान (ईश्वर के प्रति श्रद्धावान होना)

- **आसन**
  शारीरिक नियंत्रण

- **प्राणायाम**
  प्राण-नियंत्रण

- **प्रत्याहार**
  इन्द्रियों का एकाग्र होकर चित्त के स्वरूप का अनुकरण करना।

- **धारणा**
  चित्त को एक स्थान विशेष पर केंद्रित करना।

- **ध्यान**
  ध्येय वस्तु/शक्ति का चिंतन करना।

- **समाधि**
  आत्मा से जुड़ना
  - सम्प्रज्ञात
  - असम्प्रज्ञात

"

जानें योग को और भी विस्तार से, पत्रिका के दूसरे संस्करण से।

# विश्व के देशों के डाक टिकटों पर हिन्दू देवी-देवता

सनातन अनुसंधान संगठन

डाक टिकट क्या होते हैं यह तो हम भली भांति जानते ही हैं। आम तौर पर यह एक छोटा आयताकार कागज का टुकड़ा होता है जो एक सन्देश आवरण(लिफाफे) पर चिपका रहता है। प्रत्येक देश का डाक टिकट अलग होता है। सभी देश लगभग प्रत्येक वर्ष किसी विशेष पर्व, सम्मेलन, विज्ञान, इतिहास, धर्म, प्रकृति व किसी महापुरुष के सम्मान जैसे कई विषयों पर डाक टिकट जारी करते हैं।

पत्रिका के इस खण्ड में हम बात कर रहे हैं हिन्दू देवी देवताओं की। वैसे तो सभी हिन्दू महावतार भारतवर्ष से ही सम्बन्धित हैं, फिर भी आर्य सभ्यता की पूरे विश्व में छाप होने के कारण कई देश समय-समय पर हमारी वैदिक संस्कृति, कला आदि के सम्मान में डाक टिकट जारी करते रहते हैं। भारत ने भी कई ऐसे डाक टिकट जारी किये हैं परन्तु इस लेख में हम अन्य देशों के उन डाक टिकटों को देखेंगे जो हमारे वैदिक धर्म व देवी-देवताओं से सम्बन्धित हैं।

सन् 1955 में लाओस द्वारा जारी किये गए इन टिकटों में हिन्दू चित्र अंकित हैं।

सन् 1962 में इन्डोनेशिया ने रामायण के पात्रों के सम्मान में डाक टिकट जारी किये।
इनमें राम, सीता, जटायु आदि को देखा जा सकता है।

सन् 1964 में कम्बोडिया के द्वारा हनुमान जी के चित्र वाले 5 डाक टिकट जारी किये गये थे।

सन् 1969 में लाओस ने पुन: वैदिक धर्म से सम्बन्धित डाक टिकट जारी किये जिनमें रामायण के दृश्य अंकित थे।

सन् 1971 में इन्डोनेशिया द्वारा जारी इन टिकटों में राम और मारीच देखे जा सकते हैं।

सन् 1971 में लाओस द्वारा जारी किये इन टिकटों में मत्स्य व गणेश जी अंकित हैं।

सन् 1972 में जापान द्वारा जारी इस टिकट में श्री कृष्ण जी अंकित हैं।

सन् 1973 में थाईलैंड ने रामायण पर आधारित 8 टिकट जारी किये जिनमें अशोक वाटिका, लंका के दृश्य व वानर सेना आदि के चित्र अंकित हैं।

सन् 1974 में इन्डोनेशिया ने महाभारत के तीन पात्रों, क्रमश: बलदेव, कृष्ण व भीम पर डाक टिकट जारी किये।

सन् 1974 में ही लाओस ने सरस्वती,इन्द्र और ब्रह्मा के चित्र वाले टिकट जारी किये।

सन् 1979 में इराक द्वारा जारी, इन टिकटों में आधिकारिक पुष्टि नहीं की गयी कि इस पर किसका चित्र अंकित है परन्तु देखने पर साफ श्री कृष्ण की छाप इराक पर देखने को मिलती है।



सन् 1979 में पू0 जर्मनी द्वारा माँ दुर्गा का यह डाक टिकट प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्ति भारतीय महापुरुषों के चित्र वाले तीन और टिकट भी जारी किये गए थे।

सन् 1994 में इन्डोनेशिया द्वारा हिन्दू देवी-देवताओं के तीन डाक टिकट जारी किये गये।

सन् 2004 में लाओस द्वारा रामायण पर आधारित चार डाक टिकट जारी किये गए।

सन् 2005 में थाईलैंड ने राम, सीता, लव, कुश, हनुमान आदि पर डाक टिकट जारी किये।

सन् 2006 में कम्बोडिया ने मत्स्य, लव, कुश, राम, सीता पर डाक टिकट जारी किये।
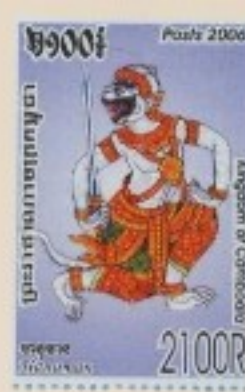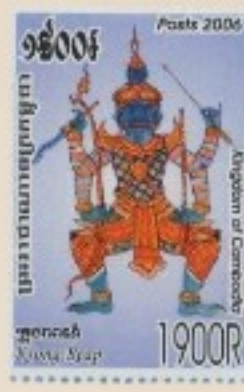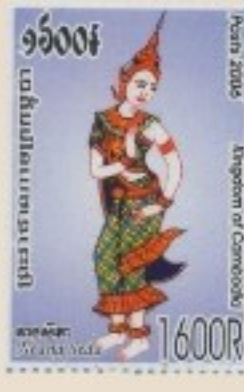
सन् 2007 में चैक गणराज्य ने शिव, पार्वती व गणेश जी के चित्र वाला डाक टिकट जारी किया।

सन् 2009 में चेक गणराज्य ने पुन: एक डाक टिकट जारी किया जिस पर राम, सीता व हनुमान जी अंकित हैं।
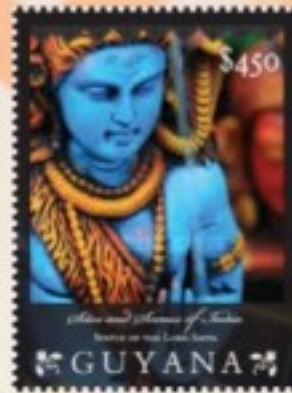
सन् 2011 मे गुयाना ने शिव जी के चित्र वाला डाक टिकट जारी किया।

सन् 2013 में एंटीगुआ-बरबुडा द्वारा
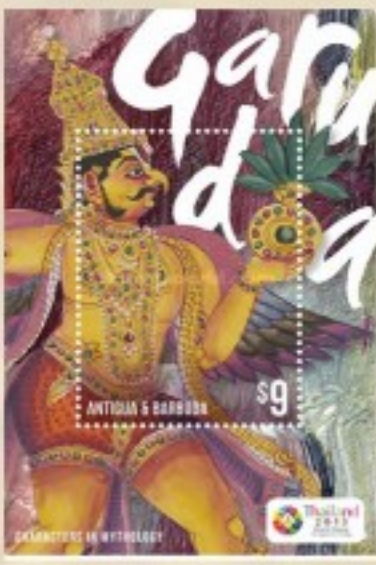
रावण, इन्द्र, वायुदेव व गरुड़ देव के चित्र वाले डाक टिकट जारी करे गये।

सन् 2014 में थाईलैंड द्वारा गणेश, ब्रह्मा, नारायण व शिव जी के चित्र वाले डाक टिकट जारी किये।

सन् 2016 में इन्डोनेशिया द्वारा जारी किये गये इन डाक टिकटों में सुग्रीव, अंगद, हनुमान जी के चित्र अंकित हैं।

## • वैदिक गणित के उत्तर:-

### अभ्यास 1.1

| क्र० | पूरक | क्रि०आधार |
| --- | --- | --- |
| क) | 36 | 100 |
| ख) | 87200 | 100000 |
| ग ) | 89998 | 100000 |
| घ ) | 01 | 10000 |

### अभ्यास 1.2

क) 05 ख) 12,
ग) 113

### अभ्यास 1.3

क) 56 ख) 8008
ग) 154 घ) 11772
ड़) 9702

## • प्रतीकात्मक चिह्न:-

Δ : यह पुस्तक अभी प्रकाशित नहीं की गई है एवं यह इसका प्रस्तावित नाम है।

* : कुछ आर्य विद्वानों के अनुसार, वर्तमान में सामान्य जन जिसे श्राद्ध करना समझते हैं वह उस क्रिया से अलग है जिसका वर्णन हमारे ग्रन्थों में हुआ है। पत्रिका के आगे के किसी अंक में हम इस पर तथ्यात्म विवरण प्रस्तुत करेंगे।

^ : पुस्तक 'योगीराज श्री कृष्ण' के अनुसार

Divas Bhardwaj

#Sanatan_Research_Organization is a new way of learning and researching about the ancient sanatan culture.

Yogash Kumar

Really nice organization for Hindus and followers of Hinduism. It's working well and I follow it.

Naman Maharshi

यह एक अत्यधिक सक्रिय और सनातन धर्म के प्रति कार्यरत संगठन है जो निरंतर सनातन धर्म और संस्कृति के लिए कार्य -रत है, मुझे इसका हिस्सा होने पर गर्व है।

Follow us on facebook

Sanatan Research Organization

जय सनातन धर्म !
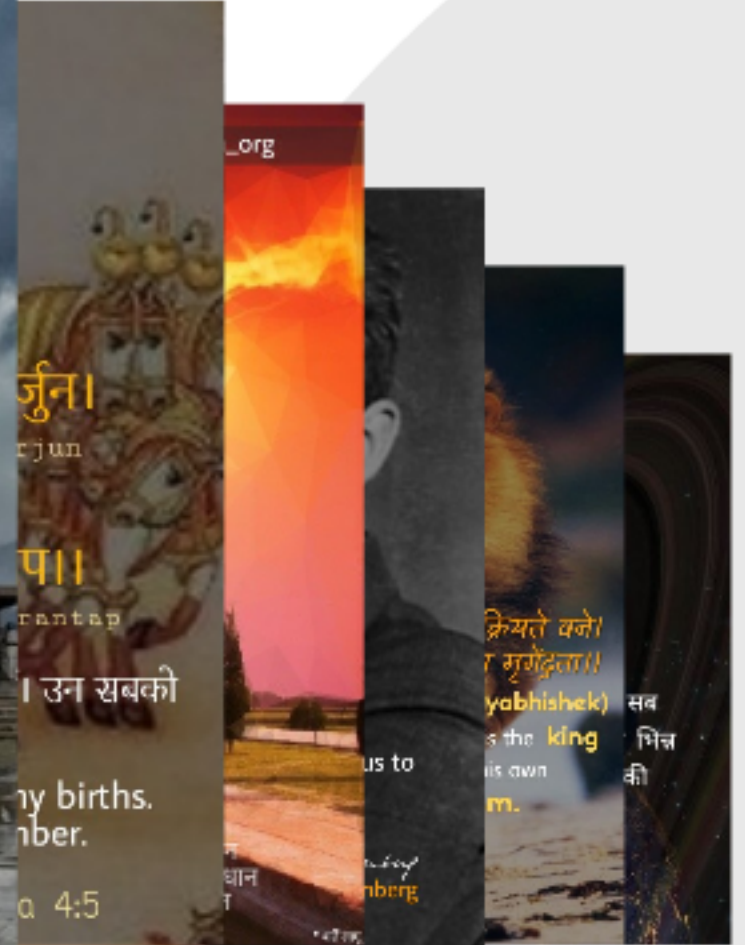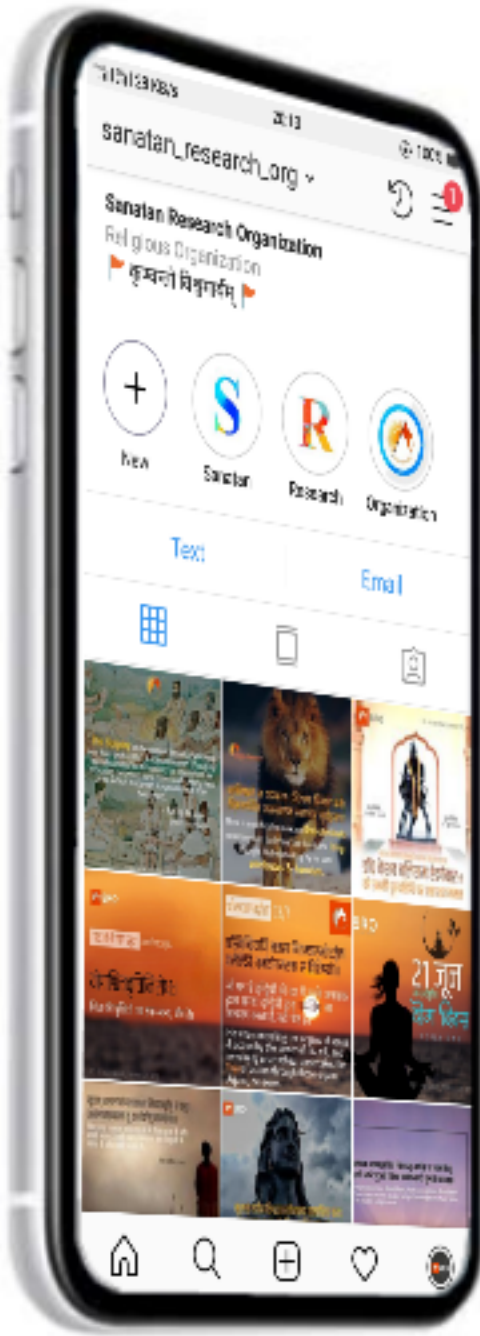
और अधिक जानकारी व तथ्यों के लिए
जुड़ें हमसे **Instagram** पर !

sanatan_research_org